ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-3* Issue-12* March- 2019
Anthology : The Research

भौतिकवाद के पृष्ठ पर हासिये में सिमटते बुजुर्ग

शशिवल्लभ शर्मा
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
अम्बाह पी.जी. कॉलेज,
अम्बाह,मुरैना (म.प्र.)

सारांश

बुजुर्ग शब्द सुनते ही हमारे मन में परिपक्वता, गम्भीरता, प्रोढ़ता, शारीरिक शिथिलता जीवन के गहन अनुभवों के जीते जागते शब्द कोश का बिम्ब बन जाता है। उम्र के पढ़ाव पर जिसकी शारीरिक और बौद्धिक कार्य क्षमताएँ युवाओं की अपेक्षा कम हो जाती हैं, तब व्यवस्थाएँ उन्हें अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त कर देती हैं। सृष्टि के संचलन की अपनी एक गति है, सृष्टि के साथ–साथ समाज भी गतिमान है। आज वैश्विक प्रतिस्पर्धा में मानव आगे निकलने की होड़ में है। पिछले दो दशकों में भारत ने जो अपना भौतिक विकास किया है निःसन्देह उसकी प्रतिस्पर्धात्मक ऊर्जा सराहनीय है, लेकिन दूसरी ओर भारतीय संस्कृति के मूल्यों का जो दामिनीकरण हुआ है, उसे भी हमें स्वीकार करने में हिचक नहीं होना चाहिए। विकास व्यक्ति का हो या राष्ट्र का, एक को हासिये पर डालकर दूसरे का हाँसिल करलेना विकासवाद के सिद्धान्तों में परिभाषित नहीं किया जा सकता। असन्तुलन भावी सामाजिक व्यवस्थाओं का सुदृण आधार कदापि नहीं हो सकता। माना कि बुजुर्गों की कार्यक्षमताएँ युवाओं के अनुपात में घट जाती हैं किन्तु सामाजिक भवन की सुदृणता में बुजुर्ग का स्तंभ हटा देना हमारे भविष्य की सौन्दर्य संरचना में कुरूपता का कारण अवश्य बन जाएगी। वर्तमान दौर का बुद्विजीवी और सामाज सेवी इस बात को स्वीकारने और चिंतन करने को विवश हैं कि आधुनिक युग में बुजुर्ग स्वयं को असुरक्षित महसूस कर रहा है। इसके लिए कहीं न कहीं हमारी मानसिकता, पर्यावरण और परिस्थितियाँ जिम्मेदार हैं।

मुख्य शब्द : वृद्धजन, नगरीकरण, भौतिकवाद, व्यक्तिवाद, वृद्धाश्रम, सरकार, योजनाएँ।

प्रस्तावना

भारत की अधिकांश जनता गाँवों में निवास करती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में भौतिक संशाधनों का चलन बड़ा और बड़ता चला गया। जनसंचार के माध्यम जन–जन तक पहुँचे। घर से बाहर की ताजा जानकारी ग्रामीणों को मिलने लगी। रोजगार के नये–नये अवसर देखने को मिले। लोगों ने ग्रामीण परिवेश से निकलकर शहरों की ओर प्रस्थान किया। कुछ लोग व्यापार करने में लग गए जो कुछ शासकीय–अशासकीय नोकरी में चले गए। कुछ समय बाद वो अपने बीबी–बच्चों को बेहतर शिक्षा और स्वास्थ्य की खातिर शहरों में लेकर आगए। बुजुर्ग माता–पिताओं ने यह समझोता कर अपने बेटों को विदा कर दिया कि तुम्हारी उन्नति और प्रगति ही हमारी मेहनत का परिणाम है। बूढ़े माँ–बाप अपने हालातों पर गाँव में रह गए। धीरे–धीरे नगरों के लोग महानगरों में और महानगरों के लोग विदेशों में चले गए। परिणामतः बुजुगों का एकाकी जीवन खुद के हाल और पड़ोसियों के सहारे व्यतीत होने लगा। मध्य रात्रि में घर मे अकेले ˙ बुजुर्ग बाथरूम जाते बक्त कई बार पैर फिसलने के

कारण दुर्घटना का शिकार हो जाते हैं और कई बार उनकी गंभीर बीमारी के कारण मृत्यु हो जाती है और पड़ोसियों को सुबह पता लगता है। जिनके बेटे विदेशों में हैं तो उनका अंतिम संस्कार भी सरकारी तरीके से सम्पन्न होता है।

आज जिन परिवारों में बुजुर्ग साथ रहते हैं वहाँ दूसरी समस्या अपनों से सम्वाद हीनता की है। समय नहीं हैं बात करने का। घर से बाहर निकलने पर इसलिए प्रतिबंध लगा दिया गया है कि अब चलने– फिरने में सक्षम नहीं हैं। बाहर पति–पत्नी जॉव करते हैं तो उनके लिए खाना बनाकर रख जाना उनकी मजबूरी है और माता–पिता को ठंडा खाना। बुजुर्गों को अपने नाती–पोतों से बड़ा लगाव होता है लेकिन आज कॉन्वेण्ट शिक्षा इतनी द्रुत और लम्बी हो गई है कि उनसे बात करने का समय नहीं है। आज पूरा समाज मूल्य हीनता का शिकार होता जा रहा है। बच्चों को दादा–दादी, नाना–नानी की गोद में बैठकर मिलने बाली मूल्य प्रधान शिक्षा का स्थान आज इंटरनेट और सॉशलमीडिया ने ले लिया है। अति जागरूक लोग अपने बच्चों को इसलिए भी बुजुर्गों के पास नहीं जाने देते कि कहीं किसी बीमारी का संक्रमण न हो जाए। परिणामतः सम्वाद हीनता उन्हें गहरे अवसाद में धकेल देती है।

मनोवैज्ञानिक रूप से विचार करने पर ज्ञात होता है कि हर इसांन की अपनी एक विचार धारा होती है और बोलने की एक टोन होती है। जो इंसान सत्तर वर्षों तक जिस विचार धारा और जिस टोन में जिया हो उसे आप बदलना चाहें जो संभवतः उनके लिए प्रताड़ना से कम नहीं होगा। यहाँ हमें स्वयं को उनके अनुसार बदलना होगा। टी वी सीरियल' तारक मेहता का उल्टा चश्मा' में चम्पक लाल गढ़ा अपने बेटे जेठा लाल गढ़ा पर इसलिए झल्ला जाते हैं कि जिसे मैंने इस लायक बनाया वही मुझे समझाए। बुजुर्ग अपने बीते समय का गुणगान करते हैं लेकिन युवा सोच इसके पक्ष में नहीं होती। जब भी कोई पुरानी बात अपने बेटों को सुनाते हैं तो बेटा यह कहकर रोक देता है कि क्या पुरानी बातों को लेकर बैठ गए हो। उस समय उनकी पीड़ा उन्हें सर्वाधिक व्यथित करने वाली होती है।

आर्थिक दृष्टि से विश्लेषण करने पर एक जो महत्वपूर्ण बात निकलकर सामने आती है वह है आर्थिक रूप से बुजुर्गों का सम्पन्न न होना। जो लोग जॉव करते थे उन्हें आज पेन्सन मिलती है, उनमें से कुछ घर आते ही बहू के हाथ में सोंप देते हैं, कुछ के बेटे, बैंक में ही ले लेते हैं और कई लागों के एटीएम कार्ड नातियों पर हैं जो हर माह पैसे निकालकर गर्ल फ्रेण्ड पर खर्च कर देते हैं। अकिंचन वृद्ध अपनी अपेक्षाओं का दमन कर लेते हैं। अभी हाल में कुछ माह पूर्व राष्ट्रीय न्यूज चेनल, जी न्यूज ने अपने डीएनए में दिखाया कि शिरडी में जहाँ करोडों रुपये दान पेटी में जमा हो जाते है, वहाँ एक बृद्व भूख और सर्दी की ठिठुरन में अपना दम तोड़ देता है और नगर पालिका के कर्मचारी उस शव को मैला गाड़ी में रख लेते हैं। कहीं न कहीं वह अभागा, संस्कार हीन बेटे और भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में आर्थिक विपन्नता का शिकार हो गया।

बुजुर्गों की असुरक्षा एक महत्वपूर्ण कारण पाश्चात्यीकरण भी समझ आता है। पश्चिमी देशों में इंसान व्यक्तिवादी है। वहाँ पारिवारिक मूल्यों का महत्व गिव एण्ड टेक का है। वृद्धाश्रम की व्यवस्था भारत में पश्चिमी देशों का अनुकरण है। दिनों दिन इनकी संख्या का बढ़ना ध्वस्त मानवीय मूल्यों का जीवंत उदाहरण है। बृद्धाश्रमों में रह रहे बुजुर्गों के अधिकांश बेटे उच्च पदासीन और एनआरआई हैं जिनके लिए परिवार के दायित्व महज औपचारिकाओं की परिधि में सिमट गए हैं।

निवारण

आधुनिक युग में असुरक्षित बुजुर्ग के निवारण पर गहन चिंतन और तटस्थ भाव से विचार करने की आवश्यकता है। सर्वप्रथम तो हमें उन कारणों पर ही पुनर्विचार करना होगा जो प्रत्यक्ष रूप से बुजुर्गों को पीड़ा देने के लिए जिम्मेदार हैं, जिनका विश्लेषण हमने कारणों में किया है। भारतीय संस्कृति में इस बात को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि हमारे यहाँ तीज–त्योहारों में पारस्परिक मेलजोल होता है। बडों से आशीर्वाद लेना, इसके पीछे यही कारण हैं कि हम अपने पारिवारिक मूल्यों को समझें। भौतिकवादी जीवन में जिन मूल्यों को हम तोड़ते जा रहे हैं उनका दुष्परिणाम ही है कि आज विदेशी हमारी कमजोरी का फायदा उठाकर मानव सेवा के बहाने अपने धर्म का प्रचार–प्रसार कर रहे हैं। अगर हमने अपने बुजुर्गों पर ध्यान दिया होता तो मदर टेरेसा को भारत में ईसाईकरण का अवसर नहीं मिलता। हमने विदेशों से जिन धारणाओं को आत्मसात किया वो हमारे लिए गले की हड्डी बन गईं। हम विदेशों से उन मूल्यों को भी स्वीकारें जो

हमारे लिए, परिवार के लिए, राष्ट्रीयता के लिए अनिवार्य हैं। चीन से हमें एक बात सीख लेना चाहिए कि चीनी नागरिक पूरे विश्व में अपना व्यापार करता है, लेकिन नागरिकता किसी दूसरे देश की नहीं लेता।

अंततः यही कहा जा सकता है कि बुजुर्गों के सम्मान में हमें अपनी संतान को बचपन से ही बड़ों के प्रति श्रद्धान्वित करना होगा। व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय हितों के लिए बच्चों में जीवन–मूल्यों का संबर्द्धन करना होगा।